आखर हिंदी पत्रिका; e-ISSN-2583-0597 खंड 3/अंक 5/दिसंबर 2023
Received: 13/12/2023; Published: 26/12/2023

लेख

झोपड़ी से शिखर तक : प्रो.एच.टी.पोते

डॉ.गोखले पंचशीला
अतिथि व्याख्याता,हिन्दी विभाग,
गुलबर्गा विश्वविद्यालय,कलबुर्गी

डॉ.गोखले पंचशीला, **झोपड़ी से शिखर तक : प्रो.एच.टी.पोते** ,आखर हिंदी पत्रिका, खंड 3/अंक 5/दिसंबर 2023,(538-546)

प्रो.एच.टी. पोते का जन्म कर्नाटक में विजयपुर जिला, इंडी तालुका से सटे छोटे से गांव हंजगी में हुआ। कल्याण कर्नाटक भूभाग के कन्नड़ भाषी दलित साहित्यकार , संवेदनशील कथाकार, उपन्यासकार, कवि, कुशल आलोचक, श्रेष्ठ अनुवादक, गहन चिंतक, जनपद साहित्य के विद्वान एवं संशोधनात्मक क्षेत्र में अपनी विशेष पहचान बनाई है। खास तौर पर वे हाशिए पर रहे लोगों के शोषण के विरुद्ध आवाज उठाते हुए नजर आते हैं ।

आप ने गुलबर्गा विश्वविद्यालय, कलबुरगि से एम.ए. ,एम .फिल, पीएचडी एवं रानी चेनम्मा विश्वविद्यालय से डी.लिट की उच्चतम उपाधि प्राप्त की है।

आप गुलबर्गा विश्वविद्यालय, कलबुरगि के कन्नड़ अध्ययन संस्था,प्रसारंग, पालि बौद्ध अध्ययन विभाग, डॉ.बी.आर.अंबेडकर अध्ययन एवं संशोधन विभाग के निर्देशक, डीन ,कला निकाय , तथा धारवाड़ कर्नाटक विश्वविद्यालय के कुलसचिव,(परीक्षा मूल्यांकन) के रूप में कार्य किया है। दसवाँ अखिल भारतीय दलित साहित्य सम्मेलन : विजयपुरा में दिए गए अध्यक्षीय भाषण के कुछ महत्वपूर्ण बातें जो बहुत ही सारगर्भित रही हैं।

दलित साहित्य परिषद, राज्य समिति के अध्यक्ष डॉ.गोलसंगी और उनके सभी पदाधिकारियों, सभी जिला अध्यक्षों, सदस्यों,सभी दलित समुदाय, कन्नड़ साहित्य के भाइयों, दलित संघर्ष समिति के सभी भाइयों , इस दो दिवसीय अखिल भारतीय साहित्य सम्मेलन का अध्यक्ष बनने का दायित्व मुझे सौंपा हैं आप सभी को जयभीम,

नमस्कार। मेरी जन्मभूमि में साहित्यिक एवं सांस्कृतिक सम्मेलन का आयोजन किया है । आपने मेरी जिम्मेदारी बढ़ा दी है। मैं जानता हूं कि ये मेरी जिंदगी की सबसे बड़ी ज़िम्मेदारी है।

यह सम्मेलन ऐतिहासिक शहर विजयपुरा में आयोजित किया जा रहा है। यहां सत्तर के दशक में भयानक सुखा पड़ा था,जब मैं अपने ही गांव में पढ़ रहा था,आर्थिक तंगी के कारण मेरे माता-पिता ने मुझे और मेरे भाईयों को विजयपुरा के एक आश्रम स्कूल में भर्ती कराया। सरकारी आश्रम स्कूल ने न केवल पेट की भूख मिटाई बल्कि तन ढकने के लिए कपड़े दिए साथ ही हमें अक्षर ज्ञान देने वाली यह जगह हमारे जीवन में बहुत मायने भी रखती है।

विद्यार्थी जीवन में जिए उन दर्द भरी दास्तां को बयां करते हुए कहा- भूख मिटाने के लिए हम जर्मन के तार चुनते थे और उसे बेचकर अपनी पसंदीदा चीजें खाते थे। वह घटना आज भी मेरे अंतर्मन को कचोटती है।

वे कहते हैं - किसी भी शिष्य को सही तरीके से मार्गदर्शन अच्छे शिक्षक ही कर सकते हैं और मेरे आश्रम स्कूल के शिक्षक मल्लिकार्जुन मठ,गुडीबाई मैडम और घंटी मास्टर इन तीनों शिक्षकों का मां जैसा व्यवहार आज भी मेरे स्मृति पटल पर ताजा है।

विजयपुरा शहर ने मेरी हर काबिलियत को तराशा है और यहां के गौरवशाली शिक्षण संस्था के अध्यक्ष श्री एम. बी.पाटिल जी ने उद्घाटन समारोह में मेरे साथ मंच साझा किया है यह मेरे लिए सम्मान एवं गौरव की बात है । आगे कहा - आश्रम स्कूल से लेकर कालेज स्तर कि शिक्षा तक, भोजन और आवास के लिए किया संघर्ष कोई भूलने वाली बात नहीं है।

सूखे की मार झेलते विजयपुरा को श्री एम. बी. पाटिल जी ने कड़ी मेहनत से जिले की सिंचाई योजनाओं को क्रियान्वित कर किसानों की बंजर भूमि को सिंचित भूमि में बदल दिया । और सभी किसानों को अंगूर,अनार और नींबू की फसलों से आर्थिक सहायता मिली है साथ ही विश्व बाजार में विजयपुरा के अंगूर एवं नींबू के अधिक उत्पादन से इस क्षेत्र को विशेष दर्जा दिलवाने में इनकी अहम भूमिका रही है।

विजयपुरा ऐतिहासिक नगर है आदिलशाही और निज़ाम शाही नवाबों ने यहां पर राजकीय हुकूमत की है। विजयपुर जिला कर्नाटक का ताज है। यहां का गुबंद विश्व प्रसिद्ध है। इस क्षेत्र की विशेषता यह रही हैं कि कृष्णा, मालप्रभा ,घटप्रभा, भीमा, और डोनी आदि पांच नदियां हैं इसलिए विजयपुर की तुलना पंजाब से की जाती है।

वे कहते हैं जगत् गुरु बसवन्ना की जन्मभूमि विजयपुरा शहर है जो हमारे लिए गर्व की बात है। इस शहर ने उच्चकुल की डींग हांकनेवाले को करारा जवाब दिया है ,यहां की भूमि ने नुलिय चंदैय्या,मडिवाळ माचिदेव, हाविनाळ कल्लय्या जैसे कई कवियों को स्थापित किया है जो हमें गौरवान्वित महसूस कराता है। आधुनिक काल के कौजलगी श्रीनिवासनराय काका कार्खानिसर, कौजलगी हनुमंतराय, कंदगल हनुमंतराय,चिक्कोडि तम्मन्ना,अबली दुबेय, जयरामाचार्य,मोहरे हनुमंतराय,नंदिगनुरु सिद्धरामप्पा, तत्वज्ञानी गुरुदेव रानडे, बी.डी. जत्तीय,बंथनाळ शिवयोगी, श्री सिद्धेश्वर स्वामी, बी. एम. पाटिल, और बाबा साहेब के साथ बौद्ध धम्म स्वीकार करनेवाले सिद्धार्थ अरिकेरि , बाबासाहेब के पार्टी के विधायक काळे, बाबासाहेब से मुलाकात करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ एल.आर. नायक , शिंदे आदि सभी ने विजयपुर जिले की कीर्ति बढ़ाई है।

कन्नड़ साहित्य की जड़ों पर अपने विचारों को रखते हुए कहा कि आधुनिक कन्नड़ साहित्य के सशक्त रचनाकार मधुरचेन्न और उनके साहित्य मित्रों का समुह पी.धुलासाहेब,रेवप्पा काप्से, सिंपि लिंगान्ना आदि की साहित्यिक उपलब्धियां वास्तव में कन्नड़ साहित्य क्षेत्र के लिए बहुमूल्य योगदान है। पिछले शताब्दी के आरंभ में हलसंगी मित्रों द्वारा लोकगीतों को लेकर किया हुआ कार्य बहुत ही प्रशंसनीय है। उनकी सक्रियता, साहित्यिक उपलब्धियां, एवं सिद्धियां अद्वितीय है। विशेष बात यह है कि नवजागरण साहित्य के प्रारंभ में हलसंगी मित्र गांव के परिवेश में रहकर अपने अपने ढंग से साहित्य साधना में लगे रहे।

मूल्की (अक्षर ज्ञान प्राप्त) परीक्षा तक पढ़ाई करने वाले इन मित्रों के ज्ञान की व्यापकता सही में आश्चर्यजनक है। हलसंगी जैसे छोटे से गांव में भी वेद - उपनिषद्, भारतीय -पश्चिमी दर्शन,श्री रामकृष्ण परमहंस, और श्री मातारविंद के दर्शन, कला एवं साहित्य से भलीभांति परिचित थे। समकालीन कवि एवं साहित्यकार द.रा. बेंद्रे,शिवराम कारंत, व्ही.कृ. गोकाक,रं. श्री मूगळी ,एस.एस. माळवाड , आदि से घनिष्ठ मित्रता थी। सन् 1922 के शुरुआत में हलसंगी गांव में 'शारदा' वाचनालय की स्थापना कर 'मोग्गू ' नामक एक हस्तलिखित पत्रिका प्रकाशित की थी। इसमें सभी हलसंगी मित्रों की कविताएं, रचनाएं और चित्र दर्ज हैं। तब लोकसाहित्य एक समृद्ध साहित्य था। हलसंगी के मित्र मधूरचेन्ना,सिम्पी लिंगान्ना,पी.धुला साहेब, और रेवप्पा काप्से ने बड़े परिश्रम से लोक साहित्य का संकलन कर विद्वानों को आश्चर्यचकित कर दिया।

कर्नाटक सरकार ने विजयपुरा में हलसंगी मित्रों की एक प्रतिष्ठित संस्था की स्थापना की है। हमें ऐसे ही संतुष्ट नहीं होना है, उन्होंने जो किया है वह एक विश्व स्तरीय कार्य है, जो दुनिया के लोकगीतों के लिए एक बहुउद्देशीय योगदान है। मैं सविनय अनुरोध करता हूं कि उनके नाम पर भारत में एक शोध संस्थान खोला जाए और हलसंगी को नवजागरण का केंद्र घोषित किया जाए। वे आगे कहते हैं -कुमार कक्कय्या आधुनिक वचन साहित्य के साधकों में सबसे प्रमुख है। चतुर्वर्ण के धर्म दर्शन जैसी अनेक महत्वपूर्ण रचनाएं देने वाले महान विचारक एवं शोधकर्ता एम .एम .कलबुर्गी को याद करते हुए रूह कांपती है। उनकी प्रगाढ़ प्रतिभा केवल विजयपुरा तक ही सीमित नहीं है बल्कि संपूर्ण राज्य के लिए उनका योगदान बहुत रहा है।

कोप्पल में अखिल भारतीय दलित साहित्य सम्मेलन का आयोजन एवं सम्मेलन का उद्घाटन एम.एम. कलबुर्गी जी ने किया और ज़ोरदार भाषण दिया,

तब उनकी बातों ने मुझे प्रभावित किया। मैंने कहा सर ये बातें तो बहुत पहले ही कहीं जानी चाहिए थी। तब उन्होंने कहा कि किसी भी बात के लिए सही वक्त की जरूरत होती है, कहते हुए मेरे प्रश्न का समाधान किया। यह दुखद तथ्य है कि ऐसे लोग हत्यारों की गोलियों का शिकार हो गए। खैर,गुरुलिंग काप्से, अरविंद मालगत्ती, सत्यानंद पात्रोट,एच.टी.पोते. हरिलाल पवार,दोड्डाण्णा भजंत्री एस.के. कोप, सुजाता चलवादी, पूर्णिमा होळिन, जैसे जिला स्तरीय साहित्यिक क्षेत्र में कई अन्य लोगों ने नाम कमाया है।

बाल-साहित्य सृजन प्रक्रिया के माध्यम से अपने जिले का नाम ऊंचा उठाने में शंगु बिरादर,शिशु संगमेश,कंच्याणी शरणाप्प,ए.के. रामेश्वर, आदि को आदर के साथ याद किया जाना चाहिए।

कन्नड़ दलित साहित्य का विकास पर प्रतिक्रिया देते हुए कहा , कन्नड़ दलित साहित्य ने साहित्यिक भाषा के दायरे में ही आकार लिया है। यह सच है कि कन्नड़ के दलित जगत को जानने के कई तरीके हैं जैसा कि मैंने पहले उल्लेख किया है कि उनमें साहित्यिक आधार ही महत्वपूर्ण है। आप देख भी सकते हैं कि कन्नड़ दलित साहित्य को भारतीय संदर्भ में एक समृद्ध आधार मिला है। कविता ,कहानी ,उपन्यास, आत्मकथा , नाटक इन विविध विधाओं में अब तक जो रचनाएं प्रकाशित हुई हैं, जहां तक मेरा सवाल है ,रचनात्मकता के शिखर पर पहुंची है। बी. श्यामसुंदर, कुमार कक्कय्या पोळ,जी. वेंकटैय्या,सोसले सिद्दप्प, बीदर के गवायी पहली पीढ़ी के दलित लेखक के रूप एन. नरसिंहय्य का कन्नड़ दलित साहित्य में बहुत बड़ा योगदान रहा है।

आधुनिक काव्य क्षेत्र में डां. सिद्धलिंगय्या, डॉ. मूड्नाकुडु चिन्नास्वामी, डॉ. अरविंद मालगत्ती, डॉ चेन्नण्णा वालिकार, डॉ. के. बी . सिद्दय्या, गोविंदय्या, डॉ. सत्यानंद पात्रोट,एन. डॉ. व्ही. मुनिवेंकटप्प, सुकन्या मारुति, बी. टी. ललिता नायक, एच. लक्ष्मीनारायण स्वामी, डॉ. सत्य मंगल महादेव, डॉ. जयदेवी गायकवाड , डॉ अनसूया कांबळे, डॉ बी. यु. सुमा, आदि कवियों ने काव्य भाषा, वैचारिक संदर्भों को बेबाकी तरीके से व्यक्त करते हुए कन्नड़ दलित साहित्य में अद्वितीय स्थान रखती है, जो ,आनेवाले नये युवा कवियों को प्रेरणा स्तंभ है। आज सैकड़ों कवि कविता लिख रहे हैं वे निम्न वर्गीय समुदाय की आकांक्षाओं और वैश्विक परिवेश की परिस्थितियों को एक साथ देख रहे हैं। विभिन्न जाति समुदायों के कवियों की रचनाओं में भिन्न-भिन्न स्वरों को समझते हैं और उनकी संवेदना को महसूस कर रहे हैं हालांकि डॉ .बाबा साहब अंबेडकर का दर्शन एवं अवधारणाएं ही इनके काव्य की पृष्ठभूमि रही है । भारतीय दलित साहित्य के संदर्भ में देखा जाए तो हर क्षेत्र एवं भाषा का रचनाकार बाबासाहेब के प्रगतिशील रुख के साथ जुड़े हुए हैं। हम सभी को स्वीकार करना होगा कि डॉ. अंबेडकर न होते तो ऐसे सम्मेलन संभव नहीं हो पाते।

कन्नड दलित आत्मकथाएं भी महाराष्ट्र साहित्य के तरजीह पर लिखीं हैं। डॉ. अरविंद मालगत्ती कृत "गवर्नमेंट ब्राह्मण ", बी.टी. ललिता नायक कृत "नम्ह रुप्ली", समता देशमाने कृत "मातंगी दिवटीगे," हनुमंतराव दोड्डमणी कृत" पंचमा", ये रचनाएं हमारे मन को जीवंत अनुभवों से भर देती है।

दलित साहित्य की गैर रचनात्मक विधा भी अपना विशिष्ट स्थान रखती है। बीते पचास वर्षों मे कई दलित विद्वान सामने आए हैं ,वे स्वतंत्र विचारक के रूप में आगे बढ़े हैं।

कुमार कक्कय्या पोळ,बी. श्याम सुंदर, सोसले सिद्दप्प, एन. नरसिंहय्य, आदि हमें याद आते हैं। प्रो. बी. कृष्णप्प, ने अपने लेखन के माध्यम से हमारी दृष्टि एवं विचारों को उन्नत किया है।

समीक्षा और शोध के संदर्भ में डां. कमला हंपना का बड़ा नाम है। डॉ. देवय्य हरवे,कोटगानहळ्ळी रामय्य, डॉ. सन्नराम, डॉ. अभय कुमार, डॉ. एच. टी. पोते, डॉ. एम. बी.पुट्टय्य, डॉ. मैलहळ्ळी रेवण्ण, डॉ. धनवंत हाजवगोळ, डॉ. अप्पगेरे सोमशेखर, गंगाराम चाडाळ, डॉ.माधव पेराजी, डॉ.वड्डगेरे नागराज, वे सभी दलित समुदाय के विद्वान हैं कहते हुए हमें गर्व हो रहा है। कमला हंपना की रचना संपादन एवं समीक्षा क्षेत्र में उनकी निपुणता हमारे लिए आदर्श है।बी. कृष्णप्प ने अपने आलोचनात्मक लेखन में दलित संवेदना को बहुत सूक्ष्मता

के साथ दर्शाया है। देवय्य हरवे ने दलित आलोचना और वैचारिक क्षेत्र में विस्तार किया है। दोनों अब हमारे बीच नहीं है, हालांकि सत्तर के दशक में वे दोनों अच्छी समीक्षाएं लिख रहे थे । उनके लेखन में सूक्ष्म अवलोकनशीलता, एवं दलित संवेदना अधिक थी।

डॉ.मैलहळ्ळी रेवण्ण पांडूलिपि विद्वान के रूप मे कार्य किया है , इतना ही नहीं मातंग समुदाय की सांस्कृतिक जड़ों को उनके लेखन में उजागर किया है। डॉ. एच. टी. पोते का लेखन समीक्षात्मक,शोधात्मक,जीवनी और वैचारिक चिंतन से ओतप्रोत है। इंदुधर होन्नापुर ने 'पंचम' पत्रिका के लेखों एवं 'संवाद' पत्रिका के लेखों के माध्यम से वर्तमान जगत में दलितों को ज्योति की तरहा पथ प्रदर्शन कर रही है। डॉ. मोहन राज ने भीमविज्म लेखन की ओर इशारा किया है। उनके अलावा डॉ.के. आर. दुर्गादास, डॉ. अर्जुन गोळसंगी, डॉ.वै. बी. हिम्मडि, डॉ. का. वे. श्रीनिवासमूर्ति , डॉ. सूर्यकांत सुजात , डॉ.पी.सुशीला,प्रो. तेजस्वी कट्टीमनी , डॉ,लिंगन्ना गोनाळ, आदि विद्वानों ने दलित साहित्य और वैचारिक चिंतन में अपनी अमिट छाप छोड़ी है।

डॉ. एच.टी. पोते ने दलित आंदोलन के नेतृत्व पर विचार रखते हुए कहा कि दलित आंदोलनों ने दलितों में जागरूकता पैदा की है और शुरुआती दिनों में उन्होंने जो जोश भरा था ,यही कारण है कि आज दलित ताकत बढ़ गई है। डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर के विचारों से प्रभावित होकर बी.श्याम सुंदर ने जिला कलबुरगि में सन् 1968 में भीमसेना का गठन किया था तब मल्लिकार्जुन खरगे जी ने प्रथम अध्यक्ष के रूप में भीम सेना का नेतृत्व किया।

देवराय इंगळे ने बेळगाव क्षेत्र में सामाजिक आंदोलन शुरू किया और अंबेडकर जी को कन्नड़ क्षेत्र में लानेवाले पहले व्यक्ति रहे थे। कलबुरगि के डॉ.डी.जी.सागर दलित संसद के एक साधारण सदस्य थे और बाद में संघर्ष समिति के राज्य संयोजक के रूप में दलित आंदोलन का नेतृत्व कर उसे आगे बढ़ाया। दलित आंदोलन बी.कृष्णप्प से आरंभ हुआ और देवनुर महादेव, सिद्धलिंगय्य, चंद्र प्रसाद त्यागी, एन. वेंकटेश, बसण्ण सिंगे, देवेंद्र हेगडे, अभिषेक चक्रवर्ती, राजू आलगुर, रमेश असंगी, एस .पी. सुळ्ळद, देवेंद्र शेळ्ळगी, रवींद्रनाथ पट्टी, एन .गिरियप्प, के. टी.शिवप्रसाद, मारुती बौद्धे, सुरेश मेंगल , मल्लेशी सज्जन, वै. सी.मयुर, आदि ने दलित आंदोलन में जान भर दी और अपनी जान भी गंवाई।

सामाजिक जीवन संदर्भ की बात उठाते हुए कहा कि हमारी आजादी को पचहत्तर वर्ष बीत चुके हैं । दलित आंदोलन होता है "भारत चमक रहा है " , "सबका साथ सबका विकास " , जैसे नारे खूब गूंजते रहे हैं, लेकिन गरीबी सभी समुदायों में एक जैसी है। आज भी हजारों दलित समुदाय गरीबी रेखा से ऊपर नहीं उठ पा रहे हैं। यह सच है कि शहरों में बसे लोगों को औद्योगिक क्षेत्र में रोजगार मिला है लेकिन पिछड़े और ग्रामीण इलाकों में दलित समुदाय का जीवन अभी भी असहनीय है। ऐसे इलाकों में सरकार की ओर से सामाजिक और आर्थिक योजनाओं का अभी तक समुचित लाभ नहीं हो पाया है। निचली जातियों को संविधान का लाभ मिलने के बजाय दलालों, बिचौलियों, गुंडों और जातीय नेताओं के हाथों गलत जाति प्रमाण पत्र हासिल करने वाले को

आरक्षण दिया जा रहा है। केंद्र और राज्य सरकारों को विभिन्न योजनाओं के माध्यम से सामाजिक एवं गरीबों की स्थिति में सुधार के लिए अधिक प्रयास करने चाहिए। और लगातार मीडिया रिपोर्ट साबित करती है कि ऐसे प्रयास पर्याप्त नहीं है।

दलित समुदाय के सामाजिक जीवन स्तर को सुधारने में यदि आर्थिक सशक्तिकरण एक है, तो दूसरी ओर अन्य समुदाय के सदस्यों में मानवीय सरोकार और आंतरिक प्रेम भी आवश्यक है ।

दलित समुदाय और उच्च जाति समुदाय के बीच अक्सर संघर्ष होता रहता है। इसका कारण दोनों समुदाय के बीच स्त्री - पुरुष प्रेम संबंध, क्षुल्लक राजनीतिक संबंध और जातिगत विरोध का संकट अभी तक कम नहीं हो पा रहा है। तालुका क्षेत्र के सीमावर्ती इलाकों में लोगों का जीवन - यापन कितने बुरी स्थिति में है कहने की जरूरत नहीं है।

भारत के कई उत्तरी राज्यों में सैकड़ों आदिवासी समुदाय गरीबी रेखा पर बने हुए हैं। वे हमेशा उच्च वर्ग द्वारा उत्पीड़ित होते हैं। जाति,विवाह, जमीन आदि ऐसे झगड़ों में वे उलझते जा रहे हैं। ऐसी भयानक स्थिति कर्नाटक में नहीं है लेकिन कुदुरेमोती, कंबालपल्ली, बेंडीगेरि मामलों के अलावा हाल ही में पुलिस स्टेशन में पेशाब पिलाने जैसे दर्जनों मामले सामने आए हैं। उन असंवैधानिक कार्य को दोहराकर वापस लाना , इसका कारण सामाजिक समरसता का अभाव है। यह सच है कि कर्नाटक की तुलना अन्य राज्यों के साथ करते हैं तो यहां की स्थिति इतनी गंभीर नहीं है।यह भी सच है कि पिछले चार वर्षों में जाति विषमता में जो वृद्धि हुई है वह चौंकाने वाली भी रही है।

मुझे लगता है कि दलित संघर्ष समिति की राज्य इकाई, जिला इकाई और तालुका इकाई समानता के लिए सक्रिय रूप से सतर्क नहीं है , यह एक कारण है।

दलित असंगठित रहे हैं के फलस्वरूप सिर के बाल उड़ाते हुए एक सांसद ने अपनी जुबान लंबी करते हुए कहा कि अगर सावरकर देशद्रोही है तो अंबेडकर क्यों देशद्रोही नहीं है। हमारे बीच में ऐसे लोग हैं जो कहते हैं कि अगर हम दोबारा सत्ता में आएंगे तो संविधान बदल देंगे। ऐसे लोगों को मतदान के माध्यम से सबक सिखाना चाहिए और जो लोग संविधान के पक्षधर हैं उन्हें बिना भूलें मतदान करना चाहिए।

वे आगे कहते हैं कि सरकार ने दलितों और निचली जातियों के लिए कई निगम - संस्थाएं स्थापित किए हैं लेकिन वे प्रभावी ढंग से काम नहीं कर रही हैं। इसलिए गांव और तालुका स्तर पर ऐसे दलित समुदायों की एन.जी.ओ.के माध्यम से पहचान कर मुझे लगता है कि ऐसे आर्थिक पैकेज पेश करना सही है। सरकारी योजनाओं का उपयोग शहरों और जिलों में जितना प्रभावी ढंग से किया जाता है उतना तालुका और ग्राम स्तर पर नहीं पा रहा है इसका कारण यहां की स्थानीय राजनीति और बिचौलियों का प्रवेश ही हो रहा है।

हमारे समाज के उच्च वर्ग का दायित्व है कि दलित और पिछड़े समुदाय को अपने करीब लाना और पानी,भोजन, एवं विवाहों के माध्यम से इन सभी से नजदीकियां बढ़ाने की संभावना अधिक है। उन दोनों को यह समझने की जरूरत है कि झगड़ा विष की तरह है । मैं समझता हूं कि सरकार को सामाजिक वैज्ञानिकों की मदद से ऐसी पहल कर , वर्तमान व्यवस्था में आमूल चूल परिवर्तन लाने की आवश्यकता है। इसलिए अंबेडकर के नाम वाले निगम, मंडलियों को सामाजोन्मुख नवीनीकृत भूमि की जरूरत है। ऐसे जगहों पर मानवीय संवेदना से पुरित

दयालु अधिकारियों की नियुक्ति भी अत्यावश्यक है। यही निचले वर्ग के सुधार हेतु पर्यायात्मक कारण हो सकता है।
आगे कहते हैं मैं समझता हूं कि इससे इन समूहों की हीन भावना दूर होगी और उनमें आत्मसम्मान एवं क्रियाशीलता जन्म लेंगी ।

संविधान एवं दलितों पर विचार रखते हुए कहा कि संविधान के प्रावधानों के तहत संघ और संगठन बनाने वाले लोग विधानसभा और लोकसभा के निर्वाचित सदस्य हैं , हम संविधान बदलने आए हैं कहते हुए देखा है। दलित और महिलाओं को उनका नुकसान होता दिखाई दे रहा है इसलिए इसका घोर विरोध कर रहे हैं। भाइयों सविधान सिर्फ दलितों के लिए ही नहीं है , यह भारत के बहुसंख्यकों के जीवन का आश्रय स्थल है। अगर पिछड़े लोग और महिलाएं चुप रही तो एक दिन मणिपुर के "कुकी" समुदाय के आदिवासियों की जो स्थिति हुई , ऐसी स्थिति सभी के साथ भी हो सकती है। गीत गानेवाली महिलाओं को निर्वस्त्र कर उनके साथ दुर्व्यवहार करते देख अगर खामोश बैठते हैं, मुझे लगता है कि मर्दानगी का क्या मतलब है? महिलाओं , विशेषकर दलित महिलाओं के साथ बलात्कार का ख़तरा विजयपुरा में ही है ऐसी बात नहीं है बल्कि राज्य और देश भर में बढ़ रहा है। हत्याएं नहीं रुक रही हैं, सवाल यह है कि यह कब रुकेंगे ? मंदिर असमानता के केंद्र बने हुए हैं और यही सामाजिक विघटन और संघर्ष का कारण बने हैं। ऐसे अपमानजनक केंद्रों के पोषण में सरकार को शामिल नहीं होना चाहिए। मंदिरों में निःशुल्क प्रवेश के साथ-साथ आरक्षण नियम भी लागू किया जाना चाहिए। आज मंदिर केवल पूजा अथवा मन्नत के केंद्र नहीं रह गए हैं , मंदिरों में सृजित नौकरियों में समान रूप से साझेदारी मिलनी चाहिए। तभी समाज में समानता आ सकती है और पहले ही से संविधान में निहित आशय की पुष्टि हो जाती है।

नये नींव पर जोर देते हुए कहा - कन्नड़ और संस्कृति विभाग द्वारा राज्य में कई फाउंडेशन स्थापित किए गए हैं। सबसे दुखद बात यह है कि सभी साहित्यिक और सांस्कृतिक संस्थाएं उच्च वर्ग के लेखकों और विचारकों के नाम पर स्थापित की गई है। यह हलसंगी मित्रों का समुह का फाउंडेशन हो, चाहे बसवराज कट्टीमनी का फाउंडेशन हो, हमारा उनसे कोई विरोध नहीं है। बात यह है कि ऐसी संस्थाओं में सामाजिक न्याय संभव नहीं हो पता । इसकी भरपाई के लिए बी. श्याम सुंदर, कुमारकक्कय्या पोळ, चेन्नण्ण वालीकार, चंद्रप्रसाद त्यागी, गीता नागभूषण, एच. एम .गंगादरय्य,बी . बसवलिंगप्प, इन सभी ने साहित्य, संस्कृति और सामाजिक चेतना के लिए काम किया है। मैं सरकार से आग्रह करता हूं कि जिस जिले में उनका जन्म हुआ, वहां उनके नाम पर फाउंडेशन स्थापित किया जाए, अनुदान दिया जाए और उन्हें सामाजिक और साहित्यिक कार्यक्रम आयोजित करने में सक्षम बनाया जाएं।

इस युग में जहां संविधान जालना, महात्मा गांधी की नकली हत्या आम बात है, ऐसी ताकतों को सबक सिखाया जाना चाहिए। सरकार की ओर से दलित, शोषित और महिला समुदाय को सशक्त बनाने के लिए बुद्ध, बसवा और अंबेडकर के विचारों को बढ़ावा देकर उनके समस्याओं की पर्याय सृष्टि की योजना बनानी चाहिए।

गरीबी दूर करने के लिए योजनाएं बनानी चाहिए, भूख मिटाने के लिए इंदिरा कैंटीनों को बढ़ाना चाहिए। इसके अलावा प्रौद्योगिकी और चिकित्सा के क्षेत्र में अध्ययन करने वाले विद्यार्थियों को संविधान को पढ़ने की अनिवार्यता के साथ-साथ , शोषित वर्ग का साहित्य और बुद्ध ,बसव, अंबेडकर की विचारों को पढ़ने से उनमें मानवीय संबंध विकसित करने में सफलता प्राप्त हो सकती हैं।तिमिराच्छन्न सोच से बेखबर वे सामाजिक न्याय के विरोधी बनकर मशीन की तरह काम कर रहे हैं। मानवीय संबंधों का एहसास कराने वाली प्रभावी योजनाएं बनाने की जरूरत है।

एक और महत्वपूर्ण तथ्य यह है कि मतदान के दौरान दलितों को ध्यान में रखना आम बात है। ऐसे संदर्भ में उन्हें कुछ पैसे देकर प्रलोभित किया जाता है। सरकार की गठन के बाद जब सत्ता का बटवारा होता है तो दलितों को समाज के हाशिए पर धकेल दिया जाता है इसलिए दलित समुदाय के कई लोग इस बात से चिंतित है। मैं प्रशासन से आग्रह करता हूं कि वे सही अर्थों में समुदाय के उत्थान के लिए एवं उन्हें अधिकार देने के लिए काम करें, जिसके वे हकदार हैं। सरकार और सरकार के मंत्रियों को दलितों के दुख दर्द पर आज सहानुभूति पूर्वक विचार करने की बहुत जरूरत है।

सरकार के लिए चुनौतियों पर कहा कि –सरकार के सामने सूक्ष्म अवलोकनशीलता की चुनौतियों को रखते हुए कहा कि-

* नवबौद्धों के लिए एक अलग निगम की स्थापना।

* डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर साहित्य अकादमी की स्थापना की आवश्यकता को सुझाया है।

*दलित आंदोलन सेनानी और विचारक जीवन कथन पुस्तकों के प्रकाशन हेतु अनुदान ।

* सफाई कर्मचारियों को मानव श्रम के स्थान पर मशीनरी का प्रयोग करना चाहिए। जो लोग सफाई कर्मचारी के पद पर कार्यरत हैं उन्हें पर्याय नौकरियां दी जानी चाहिए ।

अंततः कहा जाए तो हिंदी के प्रसिद्ध उपन्यासकार अमृतलाल नागर का 'नाच्यौ बहुत गोपाल' उपन्यास मेहतर समुदाय के प्रति चिंता एवं पर्याय सृष्टि का चिंतन है। यहां पर अमृतलाल नागर के विचारधारा से प्रो.एच.टी.पोते के विचार मेल खाते हुए नज़र आते हैं । तथा प्रो. एच.टी.पोते की उच्च अधिकारी के प्रति रही अपेक्षा और सुझाव जो आई.ए.एस. अधिकारी डॉ. विकास दिव्यकीर्ति के विचारों से समभाव रखते हैं । डॉ . विकास दिव्यकीर्ति ने अपने वक्तव्य में कहा कि - "आय.ए.एस. अधिकारी फाइलों में अच्छी-अच्छी बातें लिखते हैं, यहां गये, वहां बांध बंध गए, बनाए ही नहीं, खेतों में हरियाली है, वहां है भी नहीं, सब फाइलों में चल रहा है। तुम्हारी फाइलों में गांव का मौसम गुलाबी है, मगर यह आंकड़े झूठी हैं, ये दावा किताबी है ,सच नहीं है।

अगर तुम फाइलों वाले सिविल सर्वेंट हो ना, तुम्हारी फाइलों में कुछ भी लिखा हो। इससे देश,समाज नहीं सुधरता है, इसलिए ओ सिविल सर्वेंट चाहिए जो आम आदमी के पास जा सके, जिसमें करुणा हो, संवेदना हो,

समाज के वंचित वर्गों को मुख्य धारा में लाने के लिए कमिटमेंट का भाव हो, डेडीकेशन का भाव हो , तब सिविल सर्वेंट होने का मजा है। वरना तो सत्ता के भूखे लोग दुनिया में हैं ही , मैं भी और आप भी "(अंतर्जाल से)

जयभीम!

****